स्वतन्त्रता के पैमाने

सर्वांगीण स्वतन्त्रता तो मनुष्य को सतयुग में ही प्राप्त होती है। सृष्टि की इस अवस्था में सब प्रकार की स्वतन्त्रता सर्वोन्मुखी अथवा सार्वभौम रूप में सभी को सुख-शान्ति से प्रसन्न-वदन और प्रसन्न चित्त करती थी।

हर वर्ष जब हम स्वतन्त्रता दिवस के रूप में राष्ट्रीय उत्सव मनाते हैं तो लोगों में पहले की भेंट में कम उत्साह और कम हर्ष मालूम होता है और जगह-जगह लोग दु:खित स्वर से कहते हुए सुने जाते हैं कि यह स्वतन्त्रता झूठी है, हमें इससे सुख नहीं मिलता है। अत: यह एक गम्भीर विचार और मूल्यांकन का विषय है कि क्या हमारी स्वतन्त्रता सच्चे अर्थों में स्वतन्त्रता है भी या हम किसी कृत्रिम, नीरस और विकृत वस्तु को सच्चा मानकर पुरूषार्थ-हीन होकर बैठ गये हैं?

सच्ची और सर्वांगीण स्वतन्त्रता की व्याख्या - अब इस विषय पर हमें परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा समझाया है कि सच्ची और सर्वांगीण स्वतन्त्रता में मुख्य रूप से जो स्वतन्त्रता शामिल हैं, उनकी व्याख्या करेंगे –

1. शारीरिक स्वतन्त्रता – हम देखते हैं कि मनुष्य को आये दिन किसी-न-किसी प्रकार के छोटे-बड़े रोग सताते रहते हैं या शारीरिक दुर्बलता, अंगहीनता, दुर्घटना आदि पीड़ित करते हैं। और कोई क्लेश न हो तो बुढ़ापा ही आकर दबोच लेता है या अकाल मृत्यु या कष्टदायक मौत ही अपने शिकंजे में डाल देती है। अगर मनुष्य स्वस्थ न हो तो उसे जीवन नीरस और बोझिल मालूम होता है और अन्य किसी भी प्रकार की स्वतन्त्रता में उसकी रूचि नहीं रहती। शारीरिक स्वतन्त्रता का इतना मूल्य और महत्व है कि मनुष्य रोगों से छूटने के लिए अपना सारा धन लूटाने के लिए भी तैयार हो जाता है। आप देखेंगे कि समाज में इस स्वतन्त्रता की ओर लोगों का इतना ध्यान है कि जब कहीं दो परिचित व्यक्ति मिलते हैं या पत्र-व्यवहार करते हैं तो शारीरिक 'कुशल-मंगल' जरूर पूछते हैं।

2.आर्थिक स्वतन्त्रता - आर्थिक स्वतन्त्रता से हमारा भाव यह है कि मनुष्य निर्धनता से पीड़ित न हो, धन की कमी के कारण वह दु:खित और भ्रष्टाचारी, अन्यायकारी या चोर-चकार न हो। उसके पास पर्याप्त धन हो, धन कमाना उसके लिए चिन्ता या दु:ख का विषय न हो और उसके जीवन के बड़े भाग को नष्ट न कर दे। उसके धन पर चोरों और डाकुओं की नज़र न लगी रहे, न धन के बंटवारे के लिए झगड़े हों न मुकदमाबाज़ी। धन का मूल्य मनुष्य और मनुष्य के स्वमान से अधिक न हो और सरकार भी हर आये दिन टैक्सों द्वारा उसे तंग न करे। आर्थिक स्वतन्त्रता इतनी महत्वपूर्ण है कि इसके एक-न-एक पहलू को लेकर आज आन्दोलन होते हैं और लोग शरीर भी कुर्बान कर देते हैं।

3. मानसिक स्वतन्त्रता – अगर मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक हो, उसके पास धन की भी कमी न हो परन्तु यदि उसे किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता लगी रहे तो उसका धन-धान्य उसे नहीं सुहाता, वैभव और महल-माड़ी उसे नहीं भाता। मनुष्य के मन में अगर किसी संकट अथवा दुर्घटना का भय बना रहे या उसे सोचने विचारने की स्वतन्त्रता न हो तो भी उसका जीवन दु:खी हो जाता है, फिर विशेष बात तो यह है कि यदि मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि किसी विकार अथवा मानसिक व्याधि के वश में हो तब तो वह एक पूरा असुर अथवा राक्षस बन जाता है और अपने तथा दूसरों के जीवन को नष्ट करने में लग जाता है। मन की खुशी, बुद्धि की सात्विकता और विचारों की पवित्रता एक बहुत बड़ी चीज़ है और आप देखेंगे कि समाज में सुधार, मनोविद और शिक्षा आदि के सभी साधन मन को पवित्र एवं चरित्रवान बनाने तथा खुश करने के लिए ही हैं।

4. सम्बन्धों के बन्धन से स्वतन्त्रता – मनुष्य का अन्य कई-एक लोगों से सम्बन्ध तो रहता ही है। वे सम्बन्ध उसके लिए सुखदायक और सम्बन्धी सहयोगी भी सिद्ध हो सकते हैं और वही सम्बन्ध उसके लिए चिन्ता का विषय, बोझ का सामान, बन्धन की जंजीरें भी सिद्ध हो सकते हैं। सास-बहू के झगड़े, पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी का विवाद, बच्चों की उद्दण्डता, विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता, कर्मचारियों की कर्तव्य-विमुखता और तंग करने की नीति – ऐसे कई विकृत सम्बन्ध मनुष्य की नाक में दम कर देते हैं। पत्नी कहती है – 'आपका कर्तव्य है कमा कर लाना और घर की सामग्री जुटाना और बाल-बच्चों की समस्याओं की ओर देखना तथा मेरी आवश्यकताओं तथा आशाओं को पूरा करना।' माता-पिता कुछ और कर्तव्य जतलाते हैं, दफ्तर के अफ़सर कुछ और नियम जतलाते हैं। मनुष्य सोचता है कि सभी सम्बन्धी स्वार्थी हैं, आज सहानुभूति और सहृदयता का संसार से जनाज़ा उठ चुका है। सम्बन्ध विकृत होने के कारण मनुष्य परेशान हो जाता है और आये दिन हम देखते हैं कि मुकदमाबाज़ी होती है, पुलिस को बीच-बचाव करना पड़ता है या कई मनुष्य तो तंग आकर शरीरान्त करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। सम्बन्धों में स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति, सहकारिता व सह अस्तित्व का स्वाभाविक वातावरण हो तो मनुष्य का जीवन बहुत सुखी होता है।

5. प्रकृति के बन्धन और उत्पात से स्वतन्त्रता – मनुष्य के पास धन भी हो और उसका शरीर भी स्वस्थ, सुन्दर तथा सुडौल हो और सम्बन्धों में भी स्नेह हो परन्तु यदि प्रकृति का प्रकोप उस पर बना रहे और कभी अनावृष्टि, कभी अतिवृष्टि, कभी दुर्भिक्ष एवं अकाल और कभी बाढ़, कभी अग्नि काण्ड, तो उसका जीवन अस्त-व्यस्त, संकटमय, अरक्षित और परतन्त्र हो जाता है। प्रकृति का मूड मनुष्य के मूड को भी थोड़ा बहुत प्रभावित करता है और यदि प्रकृति मनुष्य को परेशान करती रहे तो मनुष्य अपने को हीन-दीन और पराजित, पर-वश तथा पराधीन-सा अनुभव करने लगता है। आज हम देखते हैं कि कभी तो प्रकृति का यह हाल है कि इतनी गर्मी पड़ती है कि मनुष्य हाँफने लगता है और पसीने से तरबतर हो जाता है और कभी इतनी सर्दी पड़ती है कि वह ठिठुर जाता है या कँपकँपी पर कंट्रोल नहीं कर सकता। यह प्रकृति की दासता ही तो है कि गर्मी के वशीभूत होकर मनुष्य को पंखे और बर्फ का सहारा लेना पड़ता है और सर्दी से बचने के लिए आग की या गरम कोट की शरण में जाना पड़ता है। तो प्रकृति के बन्धनों तथा उत्पात से स्वतन्त्रता का अर्थ है – प्रकृति के असंतुलन, तमोगुण, रजोगुण और आक्रमण से स्वतन्त्रता।

6. राजनीतिक स्वतन्त्रता – राजनीतिक परतन्त्रता तो सभी को ज्ञात है। राजनीतिक परतन्त्रता में तो यह देश सैंकड़ों वर्ष रहा है। दूसरे देशों के लोगों ने आकर यहाँ का धन-धान्य खूब लूटा, यहाँ के महल-मन्दिरों को बिगाड़ा और लोगों को घरों से उजाड़ा तथा उन्हें तबाह करने की कोशिश की। राजनीतिक स्वतन्त्रता को महत्व देने के कारण आज हरेक देश की सरकार एक बहुत बड़ी सेना रखती है। परन्तु फिर भी राजनीतिक स्वतन्त्रता अखण्ड, निर्विघ्न, निर्विवाद तथा अटल नहीं है। पड़ोसी देशों से आक्रमण की आशंका बनी रहती है और अन्दरूनी उपद्रवियों से भी तनाव बना रहता है। राजनीतिक स्वतन्त्रता का सच्चा स्वरूप तो यह है कि एक अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी सार्वभौम अथवा चक्रवर्ती सत्ता हो, राज्य करने वाला जनता को अपने पुत्रों की तरह प्यारा मानने वाला और धर्मानुकूल आचरण वाला हो तथा प्रजा भी दैवी मर्यादा का पालन करने वाली हो तथा राजा-प्रजा सम्बन्ध अत्यन्त निर्मल, घनिष्ठ एवं प्रेम-पूर्ण हो।

क्या ऐसी सच्ची स्वतन्त्रता स्वप्न है या सत्य है?

ऊपर हमने ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के आधार पर स्वतन्त्रता-सम्बन्धी जिन तत्वों की व्याख्या की है, उन्हें पढ़कर शायद कई लोग सोचेंगे कि यह सभी प्रकार की स्वतन्त्रता एक-साथ तो कदापि सभी को सुलभ नहीं हो

-शेष पेज 10 पर

हाथरस। 'विश्व सद्भावना महोत्सव' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विधायक देवेन्द्र अग्रवाल मंचासीन हैं ब्र.कु.सविता व ब्र.कु.सीता।

जयपुर-राजापार्क। सेवाकेन्द्र के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में पधारे हुए मेहमानों को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.जीत।

ककोड़-छर्रा। जिला न्यायाधीश राजीव कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रेखा तथा अन्य।

जलगांव-जामोद। गुरूदेव सेवा आश्रम के आचार्य हरिभाऊ वेरुलकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनिता।

बरनाला। जगदम्बा मातेश्वरी के पुण्य स्मृति दिवस पर फाइनेन्स कम्पनी के डायरेक्टर शान्ती स्वरूप चौधरी अपने विचार रखते हुए।

नवॉशहर-पंजाब। अन्तर्राष्ट्रीय तंबाकू दिवस पर हेल्थ डायरेक्टर एच.एस.बाली को व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी का अवलोकन कराते हुए ब्र.कु.राम तथा डॉक्टर्स।